

सीधी जिल में सिंचाई के विभिन्न साधनों का अध्ययन

निशार अहमद नूरी
शोधार्थी भूगोल विभाग
शासकीय ठाकुर रणमत सिंह महाविद्यालय, रीवा (म.प्र.)

सारांश— जल एक सर्वोपरि महत्वपूर्ण प्राकृतिक संसाधन है, क्योंकि इसके बिना किसी भी जीवधारी, पशु-पक्षी, पेड़-पौधे, वनस्पति, कृषि कार्य एवं मानव का जन्म और विकास की कल्पना संभव नहीं है। साथ ही कोई भी कार्य जल के अभाव में सम्पन्न नहीं हो सकता है। जल संसाधन पर्यावरण एवं पारिस्थितिकी तंत्र का एक आधारी तत्व है। स्वयं मनुष्य के शरीर का दो तिहाई भाग जल से ही निर्मित है। मानव के घरेलू आवश्यकताओं एवं व्यक्तिगत उपयोग के अतिरिक्त जल संसाधन का सर्वाधिक उपयोग कृषि कार्य में किया जाता है। जल संसाधन के विकास के साथ-साथ कृषि रूपान्तरण परिलक्षित होता है। कृषि रूपान्तरण के फलस्वरूप कृषि उत्पादन में वृद्धि, कृषकों की आय में वृद्धि, कृषि प्रतिरूप में परिवर्तन, शस्य संयोजन में विभिन्नता, मशीनीकरण व आधुनिक कृषि उपकरणों का प्रयोग, रासायनिक उर्वरक एवं कीटनाशक दवाओं के उपयोग में वृद्धि, उन्नत किस्म के बीज एवं बीजोपचार की दर में वृद्धि तथा उदर पालन हेतु कृषि प्रणाली से विकसित व्यवसायिक कृषि निश्चित ही कृषि रूपान्तरण और जल संसाधन के विकास को परिलक्षित करता है।

मुख्य शब्द:- स्वच्छ जल , कृषि एवं सिंचाई।

प्रस्तावना :-

देश के समान जिले में भी कृषि – यहां के लिये अर्थव्यवस्था की रीढ़ है। सकल घरेलू उत्पादन में अधिकांश योगदान कृषि उत्पादों का ही रहता है, कृषि के माध्यम से केवल खाद्यान्न ही नहीं अपितु अन्य कई ऐसे उत्पाद प्राप्त करते हैं जो हमारी आर्थिक स्थिति को सुधारने में सहायक है। स्वच्छ जल सदा से ही मानवीय उपयोग में सर्वोपरि रहा है। प्राचीन काल में सभ्यताओं का नदी घाटियों में विकास उपरोक्त तथ्य को प्रमाणित करता है। प्राचीन काल की तुलना में आज जल के महत्त्व में कई गुना वृद्धि हुई है, क्योंकि इसका प्रयोग कई रूपों में किया जाने लगा है, स्वच्छ जल अपने स्वभाव एवं गुण के आधार पर कई उपयोग में आने लगा है। सर्वविदित है कि मानसूनी वर्षा अत्यंत अनिश्चित होती है। जिले में प्राप्त वर्षा की मात्रा वितरण असमान है। कभी अतिवृष्टि से फसलें नष्ट हो जाती हैं, तो अनावृष्टि से सूख जाती हैं। एक अनुमान के अनुसार छः वर्षों में कम से कम 01 बार सूखे की स्थिति उत्पन्न हो जाती है। जिले में मानसून कभी जल्दी पहुंचता है कभी देर से, कभी वर्षा के मध्य में बहुत अधिक

अन्तराल के कारण फसलें सूख जाती हैं, कभी देरी के कारण फसलें बोई ही नहीं जा पाती। इस प्रकार यहां कि कृषि पूर्णतया मानसून पर निर्भर है। एवं इसकी शिकार होती रहती है। अतः वर्षा की इस अनिश्चितताओं से निपटने के लिये कृषकों का सिंचाई के लिये कृत्रिम रूप से जल की आवश्यकता होती है। मानसून की वर्षा का समय भी सीमित होता है, जिसमें खरीफ की फसल पर सीधा प्रभाव पड़ता है, किन्तु रबी की फसल जो अक्टूबर से फरवरी के मध्य प्राप्त की जाती है, शीतोष्ण कटिबंधीय चक्रवाती वर्षा पर निर्भर है। यह वर्षा भी अनिश्चित होती है, अतः रबी की फसल की लेने तथा सब्जी एवं फलोत्पादन के लिये भी कृत्रिम रूप से सिंचाई के लिये जल की आवश्यकता होती है। इस कारण नियमित रूप से कृषि करने के लिये सिंचाई अनिवार्य है।

भिन्न-भिन्न प्रकार की मिट्टी जल धारण क्षमता भी भिन्न होती है। कॉप युक्त जलोढ एवं काली मिट्टी में जल धारण क्षमता अधिक होती है, जिसका यहां अभाव है। यहां पाई जाने वाली बलूई, ककरीली एवं पथरीली मिट्टी में जल धारण क्षमता अत्यंत कम है। अतः इन मिट्टियों में बोई जाने वाली फसलों के लिये बार-बार जल की आवश्यकता होती है, जिसकी पूर्ति कृत्रिम जल द्वारा ही सम्भव है। इस दृष्टि से सिंचाई के लिये जल की विशेष आवश्यकता है।

विश्लेषण –

प्राचीन काल से अब तक सिंचाई के साधनों में बड़े पैमाने पर परिवर्तन देखा जा रहा है। पहले जहाँ मात्र कुएँ एवं तालाब सिंचाई के एक मात्र साधन थे, वहीं आज इनका स्थान नहर एवं ट्यूबवेल लेते जा रहें हैं। डेकुली, चरखी, मोट एवं रहट का प्रचलन अब पुरान पड चुका है। आज डीजल एवं विद्युत चालित पम्पों का प्रयोग वढ रहा है। जिले में सिंचाई के क्षेत्र में विस्तार के साथ ही सिंचाई साधनों का विकास भी बडे पैमाने पर किया जा रहा है।

आज जिले में ट्यूबवेल, विद्युत पम्प, बांध, नहरें, स्टाप डैम, एनीकट एवं लिफ्ट सिंचाई का प्रचलन प्रगति के पथ पर अग्रसर है, वहीं दुसरी ओर प्राचीन परंपरागत सिंचाई के साधनों का अस्तित्व भी विद्यमान है। राष्ट्रीय परिदृश्य के अवलोकन से स्पष्ट होता है कि देश में कुल कृषि भूमि का लगभग 40 प्रतिशत भाग नहरों, 37.8 प्रतिशत भाग कुओं, 14.

5 प्रतिशत भाग तालाबों एवं 7.7 प्रतिशत भाग अन्य साधनों के माध्यम से सिंचित किया जाता है। दूसरी ओर मध्यप्रदेश में नहरों के द्वारा सिंचाई का प्रतिशत 47.9, कुओं के द्वारा, 38.8, तालाबों के द्वारा, 3.8 एवं अन्य साधनों से 5.3 प्रतिशत कृषि भूमि की सिंचाई की जाती है। सिंचाई के विभिन्न साधनों द्वारा सिंचित क्षेत्र।

**सारिणी
भारत का परिदृश्य**

क्रमांक	साधन	सिंचित क्षेत्र का प्रतिशत
1	नहर	40.0
2	कुएँ	37.8
3	तालाब	14.5
4	अन्य साधन	7.7
	योग	100.0

मध्यप्रदेश का परिदृश्य

क्रमांक	साधन	सिंचित क्षेत्र का प्रतिशत
1	नहर	47.9
2	कुएँ	38.8
3	तालाब	3.8
4	अन्य साधन	9.5
	योग	100.0

जिला सीधी का परिदृश्य

क्रमांक	साधन	सिंचित क्षेत्र का प्रतिशत
1	नहर	35.50
2	कुएँ	21.00
3	तालाब	0.76
4	अन्य साधन	42.74
	योग	100.0

स्रोत:- अधीक्षक भूअभिलेख विभाग सीधी एवं डिस्कवरी आफ एरिगेशन 1999-2000

निष्कर्ष :-

सीधी जिले में विभिन्न साधनों के द्वारा सिंचाई की दृष्टि से देश एवं मध्यप्रदेश के सन्दर्भ में स्थित नितान्त भिन्न है। यहां सिंचाई का सबसे लोकप्रिय साधन अन्य साधन है, जिनमें नलकूप, टयुवेल इत्यादि मुख्य हैं जिससे कुल सिंचित क्षेत्र के 42.74 प्रतिशत भाग में सिंचाई की जाती है। दूसरे स्थान पर नहर का है इसके द्वारा 35.50 प्रतिशत भाग की ही सिंचाई की जाती है। कुओं का तीसरा स्थान है जिनसे 21.00

प्रतिशत भूमि की सिंचाई हो रही है। सबसे कम योगदान तालाबों का है, जिनसे जिले के कुल सिंचित भूमि का मात्र 0.76 प्रतिशत भाग ही सींचा जा रहा है।

संदर्भ :-

1. Awasthi S.C. (1966) Bundelkhand its economic Resources (unpublished Report) Geographical survey of India Annual meeting madras.
2. Alimohmmd, Food production and Food problem in India conscept public-New delhi.
3. Beord (1992) water Resources management strial arias P-125
4. Bhatia S.S. (1968) A new measures of crop Efficiency in utter pradesh Geography, Vol-43, No-3.
5. Chauhan J.S. (1990) Spatial pattern of literacy amongst Tribes in the baghelkhand plateau region. Unpublished P.hd thesis APSU Rewa (M.P.)
6. Dubey, R.S. (1976). Geomorphology of water Potential in the East rewa plateu, Applid geography sagar 1976.
7. Ducon c-(1962) Resources utilization and the conservation concept economic Geography Vol.-38 No April (1962) P-113-31.
8. Dwivedi Shrikant (1995). Land utilization of Tashil Teonther Distit rewa (M.phil Dess. APSU Rewa, M.P.).
9. डिक्सनरी आफ इयगेशन 2011-12
10. Gupta NL (1977) Agricultural typology World type of Agriculture paper on refresher course on rural trands and Technic Udaypur University.
11. Gupta G. (1968) Geomorphology of the sone Basin H.S.G. university sagar unpublished Phd. Thesis.
12. गौतम महाजन (1995) Ground water survey and investigation Ashish publishing House New delhi .
13. जोशी य0गो0 (1972) नर्मदा वेसिन का कृषि भूगोल म0प्र0 हिन्दी ग्रन्थ अकादमी भोपाल ।
14. Johnason o(1925) Agricultural regions of europ Economic Geography rev inel vol 24.no1
15. खान रबी उल्लाह (2002) सीधी जिले में जल संसाधन की सभावनाएँ दोहन एवं विकास का भौगोलिक अध्ययन (अप्रकाशित शोध प्रबन्ध) अ0प्र0सिं0वि0वि0 रीवा (म0प्र0) ।